# राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 97 15 मई 2005

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : रुपए 40/-

भारत व नेपाल में

एक प्रतिः रुपए 5/-


## इस अंक में


1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू 32
3. संगत (महर्षि शिवव्रतलाल जी) 33
4. अनमोल वचन व ज्ञान सार 34
5. सत्संग भावांश 35
6. सतगुरु कृपा 37
7. कहानी (साधक) 39
8. कहानी 40



राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित



फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

नाम तो गुरु की दात होती है, इसे ही कहते हैं–

**नाम-नाम तो सब कहैं, नाम न चिन्हा कोय।**
**नाम गुरु की दात है, नाम कहावै सोय।।**

नाम गुरु की दात है। सो मेरा खुद का तजुर्बा है। केलंगा गांव की एक लड़की थी। उसका नाम हरबाई था। उसने मास्टर रतनदास से नाम ले रखा था। मैंने कहा–हरबाई! क्या तूने नाम ले लिया है? उसने कहा–हां जी। मैंने पूछा–क्या नाम लिया? उसने कहा–बताऊंगी नहीं। मैंने कहा–कोई नाम तो जपा होगा। सतनाम, सोहम् या राधास्वामी, कुछ तो जपा होगा। उसने कहा–हमारा तो और ही नाम है। मैंने कहा–बता तो नाम कौन सा है? आखिर उसने कहा कि आप किसी को बताना नहीं। मेरा नाम तो है, बकरी की तीन टांग। सोचो! मैं क्या कहता हूं? ये तो मेरे सामने की बातें बताता हूं। बेहले की बात सिद्ध हुई कि नहीं अब? उसने कहा–महाराज जी! मेरे गुरु ने तो यही नाम दिया है कि बकरी की तीन टांग। मैंने पूछा–क्या दिखता है? उसने कहा–प्रकाश देखती हूं। बड़े तारे चमकते हैं और बिजलियां चमकती हैं। प्रकाश बड़ा भारी है। फिर मैं तो सुन्न भी हो जाती हूं। मैंने सोचा–यहां आकर के नाम बड़ा नहीं है। सतगुरु बड़ा है। आपने ये शब्द भी सुना है–

**गुरु तारेंगे हम जानी, तू सुरत काहे बौरानी।**

नाम नहीं तारता है। सतगुरु तारता है। सतगुरु और नाम में